बाज़ार दर्शन (जैनेंद्र कुमार) - महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. **'बाज़ार दर्शन' निबंध के लेखक कौन हैं?**
    - **(क) महादेवी वर्मा**
    - **(ख) जैनेंद्र कुमार**
    - **(ग) प्रेमचंद**
    - **(घ) रघुवीर सहाय**
    - **उत्तर: (ख) जैनेंद्र कुमार**
2. **लेखक के अनुसार 'पैसा' क्या है?**
    - **(क) व्यर्थ की चीज़**
    - **(ख) पावर (शक्ति)**
    - **(ग) केवल कागज़**
    - **(घ) सम्मान**
    - **उत्तर: (ख) पावर (शक्ति)**
3. **बाज़ार का जादू किस राह से काम करता है?**
    - **(क) कान की राह**
    - **(ख) नाक की राह**
    - **(ग) आँख की राह**
    - **(घ) हाथ की राह**
    - **उत्तर: (ग) आँख की राह**
4. **भगत जी रोज़ाना कितनी कमाई करते थे?**
    - **(क) एक रुपया**
    - **(ख) दस आने**

- (ग) छह आने
- (घ) आठ आने
- उत्तर: (ग) छह आने

5. बाज़ार का जादू कब सबसे ज़्यादा असर करता है?
   - (क) जब मन भरा हो और जेब खाली हो
   - (ख) जब मन खाली हो और जेब भरी हो
   - (ग) जब बाज़ार बंद हो
   - (घ) जब जेब खाली हो
   - उत्तर: (ख) जब मन खाली हो और जेब भरी हो
6. लेखक के मित्र ने बहुत सारा सामान खरीदने का श्रेय किसे दिया?
   - (क) बाज़ार की चमक को
   - (ख) अपनी ज़रूरत को
   - (ग) अपनी पत्नी को
   - (घ) अपनी अमीरी को
   - उत्तर: (ग) अपनी पत्नी को
7. भगत जी बचा हुआ चूरन किसे मुफ़्त बाँट देते थे?
   - (क) पड़ोसियों को
   - (ख) बालकों को
   - (ग) दुकानदारों को
   - (घ) रिश्तेदारों को
   - उत्तर: (ख) बालकों को
8. 'बाज़ारूपन' का क्या अर्थ है?
   - (क) बाज़ार को सजाना

- (ख) बाज़ार से लाभ उठाना
- (ग) छल-कपट और दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ाना
- (घ) बाज़ार में घूमना
- उत्तर: (ग) छल-कपट और दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ाना

9. लेखक ने किस शास्त्र को 'अनीति-शास्त्र' कहा है?
   - (क) समाजशास्त्र
   - (ख) बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को
   - (ग) धर्मशास्त्र
   - (घ) तर्कशास्त्र
   - उत्तर: (ख) बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को
10. बाज़ार की असली कृतार्थता (सार्थकता) किसमें है?
    - (क) अधिक सामान बेचने में
    - (ख) ग्राहक को ठगने में
    - (ग) आवश्यकता के समय काम आने में
    - (घ) बाज़ार को आकर्षक बनाने में
    - उत्तर: (ग) आवश्यकता के समय काम आने में

2. एक पंक्ति वाले प्रश्न (One Line Q&A)

1. 'परचेजिंग पावर' (Purchasing Power) से क्या अभिप्राय है?
   - उत्तर: परचेजिंग पावर का अर्थ है धन की क्रय शक्ति या खरीदने की क्षमता।
2. बाज़ार का निमंत्रण कैसा होता है?
   - उत्तर: ऊँचे बाज़ार का निमंत्रण मूक (शांत) होता है, जो मन में चाह जगाता है।
3. लेखक के दूसरे मित्र बाज़ार से खाली हाथ क्यों लौटे?
   - उत्तर: क्योंकि उन्हें सब कुछ लेने का मन था और कुछ चुनने का मतलब था बाकी सब छोड़ना, जो वे नहीं चाहते थे।

4. **बाज़ार के जादू की मर्यादा क्या है?**
    - **उत्तर: बाज़ार का जादू केवल तभी चलता है जब मन खाली हो और लक्ष्य निश्चित न हो।**
5. **भगत जी का चूरन हाथों-हाथ क्यों बिक जाता था?**
    - **उत्तर: क्योंकि उनके प्रति लोगों की सद्भावना थी और उनका चूरन शुद्ध व प्रसिद्ध था।**
6. **'मन खाली होना' का क्या मतलब है?**
    - **उत्तर: मन खाली होने का मतलब है कि व्यक्ति को यह पता ही नहीं है कि उसकी वास्तविक ज़रूरत क्या है।**
7. **लेखक ने 'मनीबैग' किसे कहा है?**
    - **उत्तर: पैसे की गर्मी या ऊर्जा (Energy) को लेखक ने मनीबैग कहा है।**
8. **बाज़ार को सार्थकता कौन सा मनुष्य देता है?**
    - **उत्तर: वही मनुष्य जो जानता है कि वह क्या चाहता है (जिसकी ज़रूरतें निश्चित हैं)।**
9. **पैसे की व्यंग्य-शक्ति कैसी है?**
    - **उत्तर: पैसे की व्यंग्य-शक्ति बहुत दारुण है, यह अपनों के प्रति भी कृतघ्न बना सकती है।**
10. **शून्य होने का अधिकार किसे है?**
    - **उत्तर: लेखक के अनुसार शून्य होने का अधिकार केवल परमात्मा का है जो पूर्ण है।**

3. तीन पंक्ति वाले प्रश्न (Short Answer Q&A)

1. **"पैसा पावर है" - लेखक ने इस कथन की पुष्टि कैसे की है?**
    - **उत्तर: लेखक के अनुसार पैसे की शक्ति दिखाने के लिए आस-पास माल-टाल, मकान और कोठी जमा होनी चाहिए। बैंक बैलेंस भले ही न दिखे, लेकिन भौतिक संपदा पैसे की 'परचेजिंग पावर' का सीधा सबूत पेश करती है।**

2. **बाज़ार के जादू से बचने का क्या सीधा उपाय लेखक ने बताया है?**
    - **उत्तर: बाज़ार के जादू से बचने का उपाय यह है कि जब मन खाली हो, तब बाज़ार न जाएँ। जैसे लू में पानी पीकर जाने से लू का असर नहीं होता, वैसे ही निश्चित लक्ष्य लेकर बाज़ार जाने पर उसकी चमक-दमक प्रभावहीन हो जाती है।**
3. **भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष उन्हें बाज़ार के जादू से मुक्त रखता है?**
    - **उत्तर: भगत जी का संतोषी स्वभाव और अपनी ज़रूरतों के प्रति निश्चितता उन्हें बाज़ार के जादू से बचाती है। उन्हें पता है कि उन्हें सिर्फ जीरा और नमक चाहिए, इसलिए बाकी चाँदनी चौक की चमक उनके लिए बेकार है।**
4. **'मन खाली न होना' और 'मन बंद होना' में क्या अंतर है?**
    - **उत्तर: मन खाली न होने का अर्थ है लक्ष्य का होना, जबकि मन बंद होने का अर्थ है इच्छाओं को जबरदस्ती दबा देना (शून्य हो जाना)। मनुष्य अपूर्ण है, इसलिए वह मन को बंद नहीं कर सकता; उसे बस अपनी इच्छाओं को दिशा देनी चाहिए।**
5. **बाज़ारूपन से क्या तात्पर्य है? यह समाज के लिए हानिकारक कैसे है?**
    - **उत्तर: बाज़ारूपन का अर्थ है केवल दिखावे के लिए और पैसे की गर्मी दिखाने के लिए सामान खरीदना। इससे छल-कपट बढ़ता है और सद्भाव घटता है, जिससे लोग एक-दूसरे को केवल ग्राहक और बेचक (ठगने वाला) समझने लगते हैं।**
6. **लेखक ने किस प्रकार के अर्थशास्त्र को 'मायावी शास्त्र' कहा है?**
    - **उत्तर: जो अर्थशास्त्र केवल बाज़ार के मुनाफ़े और उपभोक्ताओं के शोषण को बढ़ावा देता है, जहाँ ज़रूरत के बजाय लालच पैदा किया जाता है, उसे लेखक ने अनीति-शास्त्र या मायावी शास्त्र कहा है।**
7. **पैसे की व्यंग्य-शक्ति लेखक को किस प्रकार आहत करती है?**
    - **उत्तर: जब लेखक के पास से धूल उड़ाती मोटर कार निकलती है, तो उन्हें अपनी पैदल स्थिति पर ग्लानि होती है। यह व्यंग्य उन्हें अपने माता-पिता तक के प्रति कृतघ्न बना देता है कि उन्होंने मोटर वालों के यहाँ जन्म क्यों नहीं लिया।**

8. बाज़ार की चमक-दमक किन लोगों को 'विकल' बना सकती है?
    - उत्तर: जो लोग अपने आत्म-बोध से शून्य हैं और बाज़ार की सजावट को देखकर अपनी गरीबी या अभाव महसूस करते हैं, बाज़ार उन्हें तृष्णा, ईर्ष्या और असंतोष से घायल कर हमेशा के लिए बेकार (विकल) बना देता है।
9. भगत जी अपनी कमाई छह आने तक ही सीमित क्यों रखते थे?
    - उत्तर: भगत जी एक संयमी व्यक्ति थे। उन्हें अपनी ज़रूरत के लिए केवल छह आने ही चाहिए थे। वे लालच से दूर थे, इसलिए छह आने पूरे होते ही वे बाकी चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे ताकि उनका मन और कर्म पवित्र रहे।
10. लेखक ने उपभोक्तावाद की समस्या को किस माध्यम से समझाया है?
    - उत्तर: लेखक ने अपने मित्रों और पड़ोस में रहने वाले भगत जी के उदाहरणों के माध्यम से उपभोक्तावाद को समझाया है। वे दिखाते हैं कि कैसे संयम की कमी हमें बाज़ार का गुलाम बना देती है, जबकि स्पष्ट उद्देश्य हमें लाभ पहुँचाता है।

4. पाँच से छह पंक्ति वाले प्रश्न (Long Answer Q&A)

1. "बाज़ार दर्शन" निबंध का मूल संदेश क्या है? विस्तार से लिखिए।
    - उत्तर: इस निबंध का मूल संदेश यह है कि मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं का सही ज्ञान होना चाहिए और उसी के अनुसार बाज़ार का उपयोग करना चाहिए। बाज़ार की चमक-दमक एक 'जादू' की तरह है जो हमें अनावश्यक चीज़ें खरीदने के लिए उकसाती है, जिससे अंततः असंतोष और ईर्ष्या पैदा होती है। लेखक हमें भगत जी जैसे संयम को अपनाने की प्रेरणा देते हैं, जो बाज़ार के आकर्षण से प्रभावित हुए बिना केवल अपनी ज़रूरत का सामान लेते हैं। यदि हम बिना सोचे-समझे खरीदारी करते हैं, तो हम न केवल अपना धन बर्बाद करते हैं, बल्कि समाज में 'बाज़ारूपन' और कपट को भी बढ़ावा देते हैं।
2. भगत जी के माध्यम से लेखक ने 'पूंजीवादी मानसिकता' पर क्या प्रहार किया है?
    - उत्तर: भगत जी का चरित्र उन लोगों के लिए एक चुनौती है जो संचय और वैभव को ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं। जहाँ दुनिया 'परचेजिंग पावर' के गर्व में चूर है, वहीं भगत जी पैसे को भीख माँगते छोड़ देते हैं कि कोई उन्हें ले ले। वे थोक व्यापारियों को चूरन नहीं बेचते और न ही ऑर्डर लेते हैं, जो आज

के बिज़नेस मॉडल के विपरीत है। उनका छह आने कमाकर रुक जाना और बाकी मुफ़्त बाँटना यह सिद्ध करता है कि आत्मिक बल धन की शक्ति से कहीं ऊँचा है। वे निर्बल नहीं हैं, बल्कि वे हैं जो धन के आगे झुकते हैं।

3. बाज़ार का जादू कैसे काम करता है और इससे बचने के लिए लेखक ने क्या सुझाव दिए हैं?

    - उत्तर: बाज़ार का जादू आँख के रास्ते काम करता है और मन पर तब हावी होता है जब वह 'खाली' होता है। सजे-धजे बाज़ार को देखकर मनुष्य को अपनी चीज़ें कम और बाज़ार की चीज़ें अतुलित (ज़्यादा) लगने लगती हैं। इससे बचने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बाज़ार जाने से पहले अपनी ज़रूरतों की एक सूची मन में निश्चित कर ली जाए। यदि मन किसी लक्ष्य से भरा होगा, तो बाज़ार का आकर्षण घाव देने के बजाय आनंद देगा। लेखक का सुझाव है कि मन को बंद न करें (शून्य न बनें), बल्कि अपनी इच्छाओं को सचेत होकर नियंत्रित करें।

4. लेखक ने बाज़ार की सार्थकता किसमें मानी है? क्या आज के बाज़ार इस कसौटी पर खरे उतरते हैं?

    - उत्तर: लेखक के अनुसार बाज़ार की असली सार्थकता 'आवश्यकता के समय काम आने' में है। बाज़ार एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ आवश्यकताओं का आदान-प्रदान (Exchange) हो। लेकिन आज के मॉल और ब्रांडेड बाज़ार अक्सर इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। वे ज़रूरत पूरी करने के बजाय 'परचेजिंग पावर' का प्रदर्शन और कृत्रिम अभाव पैदा करते हैं। आज का बाज़ार अक्सर शोषण का माध्यम बन गया है, जहाँ कपट सफल होता है और निष्कपट ग्राहक शिकार। जब बाज़ार केवल दिखावे का केंद्र बन जाता है, तो वह समाज के लिए 'अनीति-शास्त्र' बन जाता है।

5. "निर्बल ही धन की ओर झुकता है" - इस कथन का निबंध के संदर्भ में विश्लेषण कीजिए।

    - उत्तर: लेखक का मानना है कि धन की ओर झुकना मनुष्य की 'अबलता' या कमजोरी का प्रमाण है। जो व्यक्ति आत्मिक रूप से समृद्ध नहीं है, वही अपनी शक्ति दिखाने के लिए बाहरी संपदा का सहारा लेता है। भगत जी जैसे 'अकिंचित्कर' (साधारण) मनुष्य धन के आगे नहीं झुकते, इसलिए वे वास्तव में

बलवान हैं। धन की चाहत अक्सर व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित करती है क्योंकि वह चेतन (मनुष्य) पर जड़ (पैसा) की विजय है। सच्चा बल वही है जो वैभव की चाह और तृष्णा से ऊपर उठकर मनुष्य को अजेय बनाता है।

6. उपभोक्तावाद और बाज़ारवाद के दौर में 'भगत जी' के आचरण की प्रासंगिकता पर अपने विचार लिखें।
    - उत्तर: आज के उपभोक्तावादी युग में, जहाँ हर तरफ विज्ञापन और डिस्काउंट के ज़रिए लोगों को लुभाया जा रहा है, भगत जी का आचरण अत्यंत प्रासंगिक है। वे हमें सिखाते हैं कि 'कितना' होने से ज़्यादा 'क्या' ज़रूरी है, यह जानना महत्वपूर्ण है। उनका आचरण समाज में अनावश्यक आर्थिक प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या को कम करने में मददगार हो सकता है। यदि हम भी भगत जी की तरह अपनी सीमाएँ तय कर लें, तो बाज़ार का शोषण रुकेगा और संसाधनों का सही वितरण होगा। यह जीवन-दृष्टि हमें मानसिक शांति और सामाजिक सद्भाव की ओर ले जाती है।
7. बाज़ार में 'परस्पर सद्भाव की घटी' का क्या कारण है और इसका परिणाम क्या होता है?
    - उत्तर: जब लोग बाज़ार में अपनी ज़रूरतों के बजाय केवल पैसे का प्रदर्शन करने जाते हैं, तो बाज़ारूपन बढ़ता है। इससे लोगों के बीच 'कपट' की भावना आती है। ग्राहक और दुकानदार एक-दूसरे को भाई या पड़ोसी न समझकर केवल एक-दूसरे को ठगने की घात में रहने वाले 'गाहक और बेचक' बन जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि समाज में मानवीय संबंध खत्म होने लगते हैं और केवल आर्थिक स्वार्थ बचता है। शोषण बढ़ने से समाज में अशांति और अविश्वास का माहौल पैदा होता है।
8. लेखक के दोनों मित्रों के बाज़ार के अनुभवों में क्या बुनियादी अंतर था?
    - उत्तर: पहले मित्र बहुत सारा सामान लेकर लौटे क्योंकि वे अपनी पत्नी की 'महिमा' और पैसे की 'परचेजिंग पावर' के प्रभाव में थे। उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा सामान बिना सोचे-समझे खरीदा। दूसरे मित्र दिन भर बाज़ार में रहे लेकिन कुछ भी नहीं खरीद सके क्योंकि उनका मन 'खाली' था। उन्हें बाज़ार की हर चीज़ आकर्षक लग रही थी और वे तय नहीं कर पा रहे थे कि क्या छोड़ें और क्या लें। दोनों ही अनुभवों में बाज़ार की जादुई शक्ति का प्रभाव

स्पष्ट है, एक ने फँसकर गलती की और दूसरा निर्णय न ले पाने के कारण परेशान रहा।

9. "अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है" - जैनेंद्र कुमार ने ऐसा क्यों कहा?

- उत्तर: लेखक ने उस अर्थशास्त्र को अनीति-शास्त्र कहा है जो केवल लाभ, लोभ और शोषण पर आधारित है। जो शास्त्र मनुष्य की वास्तविक ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ कर केवल 'बाज़ारूपन' और छल-कपट को बढ़ावा देता है, वह मानवता के लिए विडंबना है। ऐसा शास्त्र जो सिखाता है कि एक की हानि में ही दूसरे का लाभ है, वह नैतिक रूप से गलत है। वह 'मायावी' है क्योंकि वह मनुष्य को केवल उपभोक्ता बनाकर छोड़ देता है और उसके सामाजिक व नैतिक मूल्यों को नष्ट कर देता है।

10.निबंध में 'अपूर्णता के बोध' और 'सच्चे ज्ञान' के बीच क्या संबंध बताया गया है?

- उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य स्वभाव से अपूर्ण है और केवल परमात्मा ही पूर्ण (शून्य) है। सच्चा ज्ञान वही है जो हमें इस अपूर्णता का बोध कराए। जब हम अपनी अपूर्णता को स्वीकार कर लेते हैं, तभी हम अपने मन की इच्छाओं को सही दिशा में मोड़ पाते हैं। जो व्यक्ति खुद को पूर्ण मान लेता है, उसमें अहंकार आ जाता है। अपनी सीमाओं और ज़रूरतों को पहचानना ही सच्चा कर्म है। यही बोध हमें बाज़ार की तृष्णा से बचाकर संतोष की ओर ले जाता है।